Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

महिला सशक्तिकरण एवं गाँधी जी

शांति भूषण सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास) सर्वोदय पी.जी. कॉलेज, सलोन, रायबरेली।

Article Info

Publication Issue :
January-February-2022
Volume 5, Issue 1

Page Number : 213-216

Article History
Received : 01 Feb 2022
Published : 15 Feb 2022

शोध सारांश : गाँधी जी भारत की उन्नति एवं विकास के लिए महिलाओं की स्थिति में सुधार व विकास को आवश्यक मानते थे। राष्ट्रपिता ने महिलाओं को आत्म उन्नति एवं स्वनिर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित किया। वह महिलाओं में त्याग, समर्पण, सादगी, सेवा की भावना बढ़ाने पर जोर देते थे। गाँधी जी का मत था कि कानूनी रूप से विषमताओं को दूर करना, मात्र बाहरी उपचार है। वास्तविकता में आंतरिक रूप से इसकी जड़ का समूल नाश करना जरूरी है। अर्थात लोगों की मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है, तभी इस बुराई को समाप्त किया जा सकता है। एक व्यक्ति को पढ़ाओगे तो एक व्यक्ति शिक्षित होगा एक स्त्री को पढ़ाओगे तो पूरा परिवार शिक्षित होगा। जस्टिस रानाडे ने कहा था कि जितना हम जीवन भर में महिलाओं के लिए नहीं कर पाए गाँधी जी ने उतना एक दिन में कर दिया है।

मुख्य शब्द : महिला, सशक्तिकरण, गाँधी, आंतरिकए परिवार, शिक्षित, स्त्री।

प्रस्तावना : आधुनिक संसार की आधी दुनिया महिलाएँ हैं। संसार की आधी आबादी होने के बाद भी पुरुष एवं महिला एक समान स्तर पर नहीं है। महिलाओं को यद्यपि जीवन के लिए आवश्यक माना जाता है किंतु संसार के सभी क्षेत्रों में उनसे भेदभाव किया जाता है। महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा हीन समझा जाता है भारत के संदर्भ में प्राचीनकाल में महिला को सम्मान एवं समानता प्राप्त थी। प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को बंदिनी मानते हुए सभी कार्यों में उनकी सहभागिता आवश्यक मानी जाती थी। किंतु धीरे–धीरे भारत में भी महिला की दशा में गिरावट आनी शुरू हो गई। कतिपय बंदिशें एवं सीमाओं के कारण उनकी स्वतंत्रता छिनती चली गई। मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति में अत्यधिक गिरावट देखने को मिलती है। जीवन के हर क्षेत्र में उनसे भेदभाव होने लगा उन्हें अब भोग की वस्तु समझा जाने लगा। शिक्षा एवं आर्थिक अधिकारों से उन्हें वंचित रखा गया जिससे महिलाओं के प्रति विभिन्न अनीतियाँ एवं कुरीतियाँ पनपी। ब्रिटिश शासन के दौरान महिलाओं की स्थिति मध्यकाल जैसी ही रही बनी रही, किंतु भारत में उत्पन्न नवजागरण ने विभिन्न धार्मिक एवं समाज सुधारकों को जन्म दिया, जिन्होंने इसमें सुधार के लिए अपना जीवन लगा दिया।

02 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर मोहनदास करमचन्द गाँधी को भारतवासी राष्ट्रपिता के नाम से संबोधित करते हैं वे आधुनिक भारत के महान समाज सुधारक एवं नैतिक दार्शनिक थे। उनके सहज और

Copyright © 2022 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

सरल जीवन शैली एवं उनके सुधारो के कारण उन्हें महात्मा के रूप में भी जाना जाता है। गाँधी जी न केवल भारत में अपितु विश्व भर में अपने सेवा कार्यों तथा विचारों के लिए प्रसिद्ध हुए। गांधी जी ने भारत में 1815 से 1948 के मध्य ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ भारतीय संघर्ष का नेतृत्व किया अपने इस लंबे राजनीतिक संघर्ष के जीवन में उन्होंने भारत में अनेक सामाजिक सुधार एवं धार्मिक सुधार का प्रयास किया।

यद्यपि प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति को प्रमुखता प्राप्त थी तथापि कालांतर में उनकी दशा में लगातार गिरावट होती रही। 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के मध्य उनकी दशा अत्यंत खराब हो गई थी। उनकी स्थिति में सुधार के लिए हमेशा ही प्रयास होते रहे हैं। गाँधी जी ने स्त्रियों की दशा सुधारने पर अत्यधिक बल दिया। गाँधी जी ने नारी के मूल में छिपी मातृशक्ति को पहचाना और उसको जब तक पूर्ण गरिमा न मिली तब तक प्रयास करते रहे। गाँधी जी ने नारी को घर की चार दिवारी से बाहर निकाला तथा समाज और देश के व्यापक हितों में उसका प्रयोग किया। गाँधी जी ने नारी शक्ति को जगाया, उस पर आरोपित सभी बंधनों को ढीला किया, अनेकों प्रकार की कुरीतियों एवं भय वर्जनाओं के बीच आश्वस्त किया। उसे बंदनी से विद्रोहिणी बनाया तथा उसकी मर्यादा भी स्थापित की। सार्वजनिक जीवन में, गृहस्थ जीवन में सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में सर्वत्र उन्होंने नारी को मुक्त की शिक्षा दी। गाँधी जी नारी को दासी नहीं अपितु अर्धांगिनी मानते थे, उसे भोग विलास की वस्तु नहीं, जीवन की निरंतर साधना में प्रेम व साहचर्य की दीपशिखा समझते थे। यद्यपि गाँधी जी स्त्रियों को परंपरावादिनी और संकीर्णताओं की अनुगामिनी नहीं बनाना चाहते थे, तथापि उसे पुरातन उच्च आदर्श और परंपराओं से विरहित देखने को भी तैयार नहीं थे। गाँधी जी का विचार था कि स्त्री, पुरुष की सहचरी है, उसकी मानसिक शक्तियाँ पुरुष से जरा भी कम नहीं है, उसे पुरुष के छोटे–छोटे कामों में हाथ बटाने का अधिकार है, और आजादी का उसे उतना ही अधिकार है जितना पुरुषों को। नारी पुरुष की दासी नहीं अपितु कई बातों में पुरुषों से श्रेष्ठ है। गाँधी जी के अनुसार स्त्रियों में नवीन भावनाओं के सृजन की तथा उनको व्यवहार में लाने की जो शक्ति विद्यमान है वह पुरुषों में नहीं है। पुरुष अपेक्षाकृत अविचारी, उतावला और सदैव नवीनता की खोज में लगा रहने वाला होता है। इसके विपरीत स्त्री गंभीर, धैर्यवान और अधिकतर परंपरावादी होती है। इसलिए जब भी कोई नई वस्तु सूझ पड़ती है तब उसकी उत्पत्ति स्त्री के कोमल हृदय से ही होती है। अतएव मेरा मानता है कि यदि शिक्षित स्त्रियाँ पुरुषों की नकल करना छोड़ दें और स्त्री संबंधी महान प्रश्नों पर स्वतंत्र रूप से विचार करें तो हम उनकी उलझन को आसानी से सुलझा सकते हैं। श्रीमती रेणुकारे के विचार से सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन स्त्रियों की स्थिति में उस समय आया जब गाँधी जी ने भारत की आजादी के संघर्ष में महिलाओं का आह्वान किया। पुरानी रूढ़ियों और परंपराओं की उपेक्षा कर स्त्रियों ने गाँधी जी के अहिंसात्मक आंदोलन में सहर्ष और सक्रिय भाग लिया। उनके असाधारण चुंबकीय व्यक्तित्व का प्रभाव था कि घरों की चार दिवारीयों से बाहर निकलकर महिलाओं ने पुरुषों के समान राजनीतिक और सामाजिक आंदोलन में भाग लेना शुरू कर दिया। वास्तव में गाँधी जी के आगमन के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी एक नए युग का उदय हुआ। बुर्का और पर्दा में रहने वाली उच्च वर्ग की स्त्रियों ने भी गाँधी जी के आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। स्वयं गाँधी जी ने महिलाओं के संबंध में कहा था कि भारतीय पुरुषों ने भारतीय स्त्रियों को बहुत पिछड़ा बनाकर रखा है। आजकल सुधार का दम्भ भरने वाले अथवा खा पीकर सुखी रहने वाले बहुतेरे भारतीय भले ही हिंदू, मुसलमान, पारसी या इसाई हो स्त्रियों को अपने विषय भोग के लिए मनमाने ढंग से रखते हैं। यदि भारत में 50% मानव प्राणी हमेशा अज्ञान की दशा में और खिलौने बनकर रहे तो इससे भारत की पूँजी में कितना घाटा होगा, यह सहज ही समझा जा सकता है। गाँधी जी ने स्त्रियों से पुरुषों के द्वारा छीने गए अधिकारों को माँगने का आग्रह किया, स्त्री पुरुष के पारस्परिक

सामंजस्य और सद्भाव से ही समाज का संतुलित विकास और उन्नयन संभव है। गाँधी जी स्त्रियों की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए बराबर पुरुषों को भी प्रेरित करते रहे। स्त्रियों को अबला कहने वाले पुरुषों को बार–बार चेतावनी दी कि स्त्री को आदर और समानता का स्थान दिए बिना भारतीय समाज का उत्थान नहीं हो सकता। पुरुष अपने कर्तव्य का पालन करें अथवा न करें स्त्रियां अपने अधिकारों को क्यों नहीं सिद्ध करती। स्त्रियों को मताधिकार अवश्य मिलना चाहिए लेकिन जो महिला अपने सामान्य अधिकारों को नहीं समझती अथवा समझते हुए भी इन अधिकारों को प्राप्त करने की शक्ति तथा उनके कर्तव्य के प्रति जागरूक नही होती, इसमें सुधार की आवश्यकता है। गाँधी जी स्त्रियों को मतदान का हक और सामान कानूनी दर्जा देने के प्रबल समर्थक थे। गाँधी जी महिलाओं को संपत्ति संबंधी अधिकार देने के पक्ष में थे। गाँधी जी महिलाओं के आर्थिक स्वतंत्रता के प्रबल पक्षधर थे। वह भारतीय महिलाओं को अबला नहीं सबला समझते थे। अतीत में अपने चरित्र बल द्वारा जो साहसिक कार्य महिलाओं ने सम्पन्न किये थे, गाँधी जी उनके प्रशंक थे। आज राष्ट्र को उनकी आवश्यकता पर बल देते हुए उन्हें रचनात्मक कार्यो की ओर उन्मुख होन का आग्रह किया। गाँधी जी आध्यात्मिकता और नीतिपरक समाज के हिमायती थे। पश्चिम की कोरी भौतिकवादिता से भारतीय नारी समाज को दूर रखना चाहते थे। गाँधी जी भारत के राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण सत्य, अहिंसा, सादगी, सात्विकता आज के आधार पर ही करना चाहते थे। इसलिए विदेशी सभ्यता की विलासिता से भारतीय नारी समाज को अलग रखना चाहते थे। उनका विश्वास था कि स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा श्रेष्ठ चरित्र बल होता है। आज भी वह त्याग, तपस्या, नम्रता, श्रद्धा, बलिदान और ज्ञान की मूर्ति है। गाँधी जी स्त्रियों की सामाजिक प्रतिष्ठा और गौरव का विस्तार समानता के आधार पर करना चाहते थे। अपनी मद्रास यात्रा के अवसर पर उन्होंने कहा था, ''मैं तो चाहता हूँ कि– स्त्रियों में सीता की सी पवित्रता का वह तेज हो, जिसके सामने रावण जैसे समर्थ पुरुष को भी हार माननी पड़े। अगर आप में ऐसा तेज हो तो हिंदुस्तान में आपका डंका बजेगा और दुनिया को आप स्वर्ग बना देंगी।'' गाँधी जी ने स्त्री में साहस एवं आत्मविश्वास पैदा करने पर विशेष बल दिया उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों का उदाहरण देते हुए इस बात पर बल दिया कि यदि इनमें साहस और आत्मविश्वास आ जाए तो कभी किसी पर आश्रित नहीं होगी तथा बड़े से बड़े कार्य को संपन्न कर सकेंगी। सदियों से पुरुषों ने जिस प्रकार नारी को अपना दासी बनाया, अन्याययुक्त बंधनों में जकड़ा, वह समाप्त होना चाहिए। ऐसा समाज निर्मित होना चाहिए जिसमें अन्याय, अत्याचार, शोषण जैसी बुराइयाँ न हो। गाँधी जी का मत था कि जब तक राष्ट्र की जननी स्वरूप हमारी स्त्रियाँ ज्ञानवान नहीं होगी और उन्हें स्वतंत्रता नहीं मिलती तथा उनसे संबंधित कानून, रिवाज और पुरानी रूढ़ियों में आवश्यक परिवर्तन नहीं किए जाते तब तक राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता। इस संपूर्ण सुधार के लिए महात्मा गाँधी महिलाओं की पूर्ण स्वतंत्रता के पक्षपाती थे।

अन्त में हम कह सकते हैं गाँधी जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान महिला सशक्तीकरण की वकालत की, उन्होंने सत्याग्रह सहित विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी को समानता के स्तर पर प्रोत्साहित करते रहे। गाँधी जी ने पारम्परिक लैंगिक असमानता एवं भेदभाव को चुनौती दी तथा महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतन्त्रता पर जोर दिया। प्रगति के बावजूद लैंगिग असमानता, महिलाओं के प्रति हिंसा, घरेलू हिंसा, यौन उतपीड़न जैसे मुद्दे अभी भी कायम हैं, जिन्हें गाँधी संदेश एवं विचारों को क्रियान्वित कर सुधार किया जा सकता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गाँधी जी भारत की उन्नति एवं विकास के लिए महिलाओं की स्थिति में सुधार व विकास को आवश्यक मानते थे। राष्ट्रपिता ने महिलाओं को आत्म उन्नति एवं स्वनिर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित किया। वह महिलाओं में त्याग, समर्पण, सादगी, सेवा की भावना बढ़ाने पर जोर देते थे। गाँधी जी का मत था कि कानूनी रूप

से विषमताओं को दूर करना, मात्र बाहरी उपचार है। वास्तविकता में आंतरिक रूप से इसकी जड़ का समूल नाश करना जरूरी है। अर्थात लोगों की मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है, तभी इस बुराई को समाप्त किया जा सकता है। एक व्यक्ति को पढ़ाओगे तो एक व्यक्ति शिक्षित होगा एक स्त्री को पढ़ाओगे तो पूरा परिवार शिक्षित होगा। जस्टिस रानाडे ने कहा था कि जितना हम जीवन भर में महिलाओं के लिए नहीं कर पाए गाँधी जी ने उतना एक दिन में कर दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.महात्मा गाँधी–स्त्रियाँ और उनकी समस्याऐं, सम्पूर्ण गाँधी वांङ्मय, वीमन एण्ड सोसल इंजस्टिस, यंग इण्डिया, हरिजन, सेवक
2.ममता अग्रवाल–वोमेंस मूवमेंअ इन इण्डिया
3.गुल राशिदा और अनीषा सफी–वोमेंस मूवमेंअ इन इण्डिया
4.सीता कपाड़िया–अ ट्रिब्यूट टू महात्मा गाँधी : हिज व्यूज ऑन वोमेन एण्ड सोसल चैलेंज
5. टी0 के0 एन उन्नीयन–गाँधी एण्ड सोसल चेंज